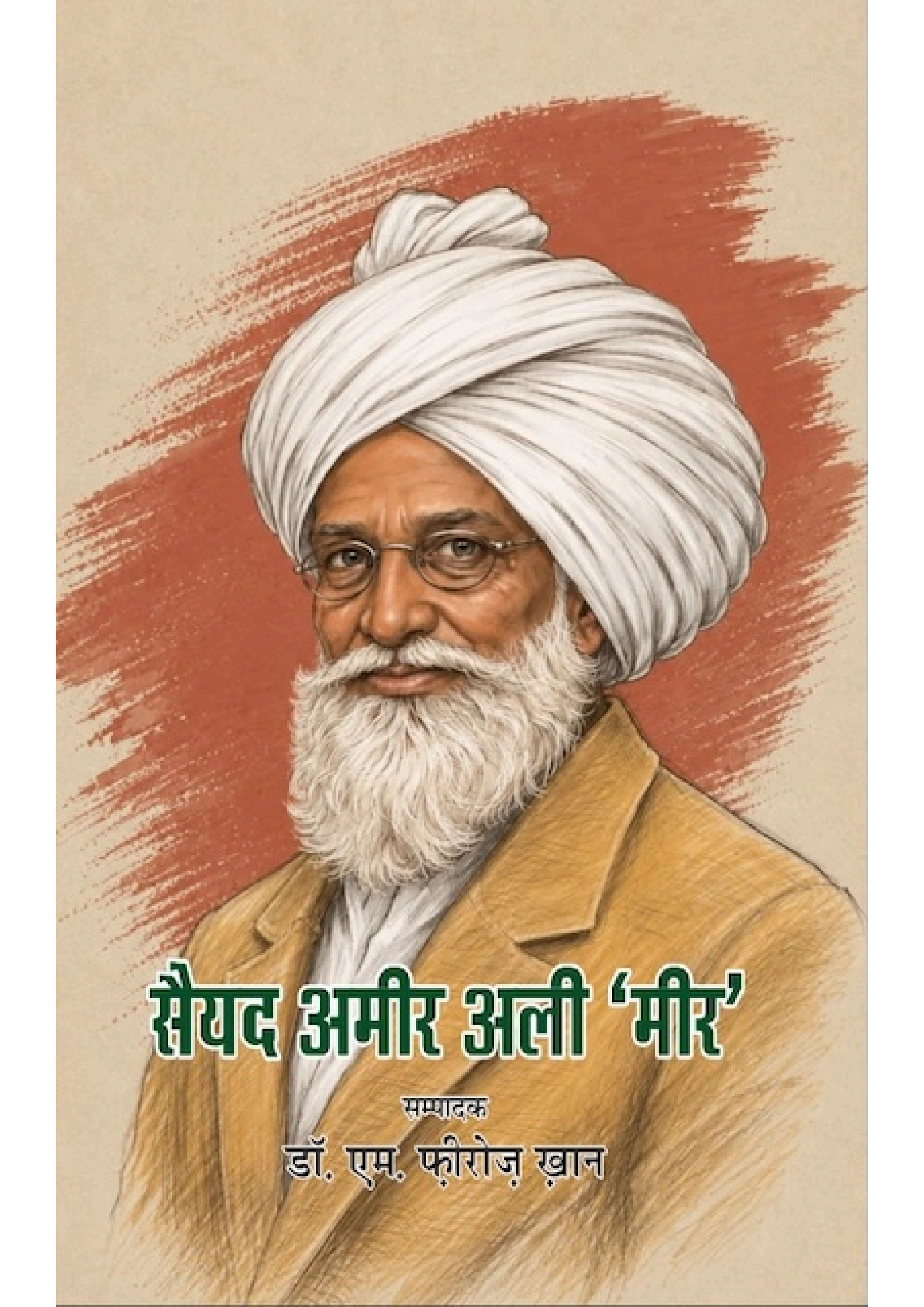


A detailed portrait of Syed Amir Ali 'Mir', an elderly man with a long white beard and glasses, wearing a white turban and a brown jacket. The background is a textured red and orange wash.

सैयद अमीर अली 'मीर'

सम्पादक

डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान

સૈયદ અમીર અલી 'મીર'

सैयद अमीर अली 'मीर'

सम्पादक

डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान



विकास प्रकाशन, कानपुर

मूल्य : सात सौ पचास रुपए मात्र

पुस्तक	:	सैयद अमीर अली 'मीर'
सम्पादक	:	डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान
प्रकाशक	:	विकास प्रकाशन 311 सी. विश्व बैंक, बर्रा, कानपुर- 208027
संस्करण	:	प्रथम, अप्रैल 2026 ई.
आवरण-सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द-सज्जा	:	अथर्व ग्रॉफ़िक्स, जवाहर नगर, कानपुर
मुद्रक	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
मूल्य	:	750/-
ISBN	:	978-81-93-47390-74-6

हिंदी के उन निष्ठावान साधकों को, जिन्होंने अपने कर्म, चिंतन और
सशक्त लेखनी से इस भाषा को समृद्ध और गौरवान्वित किया—

ज़हूर बख़्श (म.प्र.)

सैयद कासिम अली (म.प्र.)

इसराइल (बिहार)

मोहम्मद ताहिर (उ.प्र.)

नफीस आफ़रीदी (राजस्थान)

को सादर समर्पित...

दो शब्द

हिंदी के साथ मुसलमानों का घनिष्ठ सम्बन्ध प्राचीन काल से वर्तमान समय तक अक्षुण्ण रहा है। इतना ही नहीं, वे हिंदी साहित्य सर्जन में भी सक्रिय सहयोग देते रहे हैं। फलस्वरूप अब्दुल रहमान, जायसी, कुतुबन से लेकर इस परम्परा में सैकड़ों मुसलमान कवियों और लेखकों ने अपनी रचनाओं द्वारा हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। यह परम्परा अबाध गति से प्रवाहित हो रही है। हिंदी के आधुनिक मुसलमान कवियों में सैयद अमीर अली 'मीर' का सर्वोच्च स्थान है। इनका जन्म मध्य प्रदेश के सागर जिला के देवरी नामक गाँव में 22 अक्टूबर 1873 ई. हुआ था। बाल्यकाल में आपके पिता जी का देहान्त हो गया था। उनका लालन-पालन उनके चाचा की देख-रेख में हुआ था। सम्वत् 1949 में नार्मल स्कूल की परीक्षा जबलपुर से उत्तीर्ण कर अंजुमन इस्लामिया हाई स्कूल, जबलपुर में ड्राइंग के टीचर हो गए थे, बाद में अपनी शिक्षा को बढ़ाने के नज़रिये से जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स, बम्बई में दाखिला ले लिया लेकिन बीमारी के कारण वहाँ से वापस चले आये और अपने चाचा के कारोबार में हाथ बंटाने लगे। अपने अध्यवसाय के बल पर ये क्रमशः डिप्टी इंस्पेक्टर, पुलिस इंस्पेक्टर और तहसीलदार के पद तक पहुँच गये लेकिन किसी कारणवश नौकरी से त्याग-पत्र देना पड़ा था।

एक हिन्दुस्तानी मुस्लिम कवि की इस पहली रचना में विशुद्ध हिन्दुत्व के जो भाव प्रस्फुरित हुए, वे वास्तव में आश्चर्यजनक हैं। आपकी हिंदी-निष्ठा के सम्बन्ध में साहित्यकार ज़हूर बख्श 'हिन्दी कोविद' ने लिखा था, “वे एक प्रकार से हिंदी-संसार में मुस्लिम जगत् के प्रतिनिधि कवि थे। जब मुस्लिम समाज में हिन्दी के प्रति विद्रोह की भावनाएँ जोर पकड़ रही थीं, तब वे उसकी सेवा करने के लिए अग्रसर हुए थे और उन्होंने यथाशक्ति उस विद्रोह का मुक़ाबला किया था।”

सैयद कासिम अली लिखते हैं कि मीर साहब का जीवन चरित एक अंग्रेज सज्जन अंग्रेज़ी में लिख रहे थे। इस सम्बन्ध में उस समय उन्होंने लिखा था—“जीवन-चरित्र ऐसे लोगों के लिखे जाने चाहिये जिन्होंने वास्तव में देश और जाति की आदर्श सेवा की हो, यहाँ तो समस्त जीवन गुलामी के कोल्हू में जुते रह काटा जाता है। गुलाम किसी इच्छित कार्य करने के लिए आज़ाद नहीं, उसकी महत्वाकांक्षाएँ जन्म ले सकती हैं, लेकिन जीवन धारण नहीं कर सकतीं। उनकी कोई कीमत ही नहीं होती। वे जिसकी रोटियाँ खाते हैं उसी के लिए जीते और उसी के लिए मरते हैं। उन्हें जीना-मरना अपने लिए नहीं आता है और यह निश्चय है कि ऐसा स्वार्थी जीवन प्रशंसनीय नहीं। फिर क्यों मुझे सताया जाता है।”

सन् 1906 ई. से इनकी कवितायें 'सरस्वती' पत्रिका में स्थान पाने लगी थीं। इस पत्रिका में प्रकाशित इनकी प्रथम कविता की कुछ पंक्तियाँ—“आगे का भी वस्तु विकार।/पावेगा मुझसे संसार।।/सब पर सब मेरा अधिकार।/नमन करे मुझको संसार।।”

आपके 'मातृ-भाषा की महत्ता' शीर्षक निबन्ध पर आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने सौ रुपए का पुरस्कार भी प्रदान किया था। "प्रतियोगिता सम्बन्धी लेख में भाग लेकर सचमुच मैंने अच्छा न किया था, परन्तु वास्तविक बात प्रलोभन के सिवा और कुछ भी न थी। आपको आश्चर्य होगा कि मेरे पास कभी 100 रुपए जमा नहीं हुए। इसलिए मैंने उन्हें उसी दिन बैंक में जमा कर दिया है। अब आप मुझे 'लखपति', 'करोड़पति' आदि के समान (कुछ दिन के लिए) शतपति कह सकेंगे।" (मीर के पत्र) 'रामचरितमानस' इन्हें बड़ा प्रिय था और वे हिंदी को राजभाषा बनाने के पक्षपाती थे। "मीर साहब का हिन्दू-मुसलमान दोनों आदर करते थे। हिन्दू तो उन्हें व्यास-गद्दी पर बिठाकर उनसे रामायण सुना करते थे। एक बार मैं भाटापारा गया। उसी दिन एक सेठ जी के यहाँ रामायण हो रही थी। पण्डित जी मीर साहब व्यास-आसन पर बैठे थे। श्रोतागण बड़े ध्यान से सुन रहे थे। पण्डित जी चौपाई-दोहे कहते और मीर साहब अर्थ करते थे। मीर साहब की ऐसी ही उदार वृत्ति थी।" (साहित्यकार सैयद कासिम अली)

आपने देवरी में सम्वत् 1952 में 'मीर मण्डल कवि समाज' की स्थापना की और उसके माध्यम से अनेक कवियों और लेखकों की प्रतिभा को निखारा था। 'रामचरितमानस' इन्हें बड़ा प्रिय था और वे हिंदी को राजभाषा बनाने के पक्षपाती थे। 'रसिक कवि समाज कानपुर' और 'कवि समाज सीतापुर' की ओर से 'साहित्य-रत्न' तथा 'काव्य-रसाल' की सम्मानोपाधियाँ प्रदान की गई थीं।

बैजनाथ प्रसाद दुबे ने अपने एक आलेख में उल्लेख किया है कि—“मीर लिखित लगभग एक दर्जन कहानियाँ भी मेरे संग्रह में हैं। इसके साथ-साथ 300 कविताएँ अप्रकाशित पड़ी हैं। हम कह सकते हैं कि तीन चौथाई सामग्री प्रकाशन के लिये पड़ी हुई है। इस संग्रह के अतिरिक्त उनके पत्रों का संग्रह उच्चकोटि का है। ये पत्र हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों को समय-समय पर लिखे गये थे।” (सैयद अमीर अली 'मीर', आजकल, मार्च 1947) आपकी रचनाओं में 'बूढ़े का ब्याह' के अतिरिक्त 'नीति दर्पण', 'सदाचारी बालक', 'काव्य-संग्रह' तथा 'लेख-माला' आदि प्रमुख हैं। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में आप महात्मा शेखसादी की अत्यन्त ख्याति-प्राप्त 'गुलिस्ताँ' और 'बोस्ताँ' कृतियों का हिन्दी पद्यानुवाद कर रहे थे।

देवनागर पत्रिका में सैयद अमीर अली 'मीर' की कई रचनाएँ प्रकाशित हुई थीं लेकिन पत्रिका उपलब्ध नहीं हो पाई। एक साल में यानी प्रथम वर्ष में सात रचनाएँ—अंक-1 में देवनागरान्योक्ति पंचक (हिंदी कविता), अंक-3 में बादशाहों को अपना शिनाख्त कराना मुश्किल पड़ता है (उर्दू), अंक-6 में वनस्पति तेल(मराठी), अंक-7 में शुर्फा की औलाद (उर्दू कविता), अंक-8 में मुँहदेखी(हिन्दी), अंक-11 में एक नसीहत(हिन्दी), मदह मुल्क हिन्दुस्तान(उर्दू) रचनाएँ छपी थीं।

अनुक्रम

- दो शब्द/6
1. सैयद अमीर अली 'मीर'/11
क्षेमचन्द्र सुमन
 2. 'मीर' और उनका मण्डल/14
प्रो. कान्तिकुमार जैन
 3. मीर और मीर मंडल/32
डॉ. ब्रजभूषण सिंह 'आदर्श'
 4. सैयद अमीर अली 'मीर'/38
विनयमोहन शर्मा
 5. मीर साहब/44
माखनलाल चतुर्वेदी
 6. स्वर्गीय सैयद अमीर अली साहब 'मीर'/63
जहूर बख़्श
 7. स्व. सैयद अमीर अली 'मीर' बनाम हिंदी जनता/82
योगीन्द्र नारायण 'वृष्णि'
 8. सैयद अमीर अली 'मीर'/88
परमानंद पांचाल
 9. पं. माखनलाल जी के गुरु/92
विनय मोहन शर्मा
 10. हिन्दी के मीर/98
सैयद कासिम अली
 11. 'मीर' ने देवरी क्यों छोड़ी ?/102
कान्ति कुमार जैन

12. एक कहानी का नाटक/107
ऋषि जैमिनी कौशिक बरुआ
13. मीर कवि/110
पद्मश्री मुकुटधर पाण्डेय
14. सैयद अमीर अली 'मीर'/112
रामबहोरी शुक्ल/भगीरथ मिश्र
15. सैयद अमीर अली 'मीर'/114
बैजनाथप्रसाद दुबे
16. हिन्दी और मुसलमान/121
सैयद अमीर अली 'मीर'
17. हिन्दी साहित्य और मुसलमान/146
सैयद अमीर अली 'मीर'
18. क्या उर्दू हिंदी से भिन्न कोई भाषा है/160
सैयद अमीर अली 'मीर'
19. प्रान्तीय हिन्दी पाठ्य पुस्तकों की भाषा पर सम्मति/166
सैयद अमीर अली 'मीर'
20. प्रारम्भिक शिक्षा/172
सैयद अमीर अली 'मीर'
21. मोहर-मीमांसा/184
सैयद अमीर अली 'मीर'/ मुंशी देवीप्रसाद
22. नवयुवकों का कर्तव्य/198
सैयद अमीर अली 'मीर'
23. सुलतान सलाहुद्दीन/203
सैयद अमीर अली 'मीर'
24. पत्र/210

सैयद अमीर अली 'मीर'

क्षेमचन्द्र सुमन

आपका जन्म मध्य प्रदेश के सागर जनपद के देवरी नामक स्थान में 22 अक्टूबर सन् 1873 को हुआ था और अपने जीवन के अन्तिम दिनों में आप छत्तीसगढ़ के भाटापारा (रायपुर) नामक स्थान में जा बसे थे। आप जब केवल 2 वर्ष के ही थे तब आपके पिता मीर रुस्तम अली का देहावसान हो गया था। फलस्वरूप आपका पालन-पोषण एवं शिक्षण आपके चाचा मीर रहमत अली की देख-रेख में हुआ था। पहले-पहल आप जबलपुर से नार्मल की परीक्षा उत्तीर्ण करके वहाँ के 'अंजुमन इस्लामिया हाई स्कूल' में 'ड्राइंग-टीचर' हो गए तथा बाद में अपनी योग्यता बढ़ाने की दृष्टि से आपने बम्बई के 'जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स' में प्रवेश ले लिया। वहाँ पर आँखों में कष्ट हो जाने के कारण आप पढ़ाई बीच में ही छोड़कर जबलपुर वापिस लौट आए। यहाँ पर भी जब आपकी आँखों का कष्ट बराबर बना रहा तब आप अपनी नौकरी छोड़कर देवरी चले गए और अपने चाचा की दुकान पर ही कार्य करने लगे।

देवरी में रहते हुए आपका रुझान हिन्दी-कविता की ओर हुआ, जो धीरे-धीरे हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जगन्नाथप्रसाद 'भानु' द्वारा संस्थापित 'भानु समाज' के सम्पर्क से और भी परिपुष्ट हो गया। आपने सर्वप्रथम अपने काव्य-जीवन का प्रारम्भ 'लोभ ते अमी के अहि, चढ्यो जात चन्द पै' समस्या की पूर्ति करके किया था। आप कविता की ओर किस प्रकार आकर्षित हुए इस सम्बन्ध में आपने यों वर्णन किया है—
“सन् 1894 में एक दिन मैं देवरी में अपने चाचा की दुकान पर बैठा हुआ था कि रमजान खाँ नामक एक कांस्टेबल मेरे पास 'श्री वेंकटेश्वर समाचार' की एक प्रति लिये हुए आया, जिसमें 'कवि समाज सागर' की ओर से यह सूचना छपी थी कि जो व्यक्ति 'लोभ ते अमी के अहि, चढ्यो जात चन्द पै' समस्या की पूर्ति करेगा उसे 'छन्द प्रभाकर' नामक ग्रन्थ पुरस्कार में मिलेगा।”